प्रवचन

परमहंसश्रीहंसानंदजीसरस्वतीदण्डीस्वामीजी

विषय तालिका

CD # 08 *APR 2007 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	Pravachan – 1	51				संसार का कारण अज्ञान है अन्नपूर्णोपनिषद - पाँचभ्रान्तियाँ	a
2	Pravachan – 2	33				भ०राम पुरुष दृष्टा प्रेरक अकर्ता एवं महामाया सीताजी जगत जननी पालक और संहारकारिणी हैं	
3	Pravachan – 3	57				अन्न०उ०-पाँच भ्रान्तियाँ, १-जीव-ईश्वर भेद निरूपण एवं जहत-अजहत-भागत्याग लक्षणा	b
4	Pravachan – 4	33				अध्या०रा०-मनोहरकाण्ड श्रीराम जय राम जय जय राम - की महिमा	1
5	Pravachan – 5	51				पाँचभ्रान्तियाँ, २-कर्ताभोक्ता ३-संग ४-जगत ब्र०का विकार ५-जगत सत् एवं ब्रह्म से भिन्न	c
6	Pravachan – 6	31				राम-र अ म-नाम का अर्थ और महिमा राम अवान्तर एवं महावाक्य दोनों है	2
7	Pravachan – 7	51				माया १ श्रेय-प्रेय सुख, निद्रामाया, इसके कार्य स्वप्न जागृत एवं तुरीय/आत्मा अथवा ब्रह्म का स्वरूप निरूपण	1
8	Pravachan – 8	48				स्कन्धोपनिषद भगवान शंकर का पुत्र षडानन् को ज्ञानोपदेश	Imp
9	Pravachan – 9	31				माया २ ब्रह्मोपनिषद-सृष्टिक्रम	2
10	Pravachan – 10	48				गीता : २/१६ चार प्रकार के अभाव - प्राग, विद्ध्वंस, सामयिक एवं अत्यंत अभाव	
11	Pravachan - 11	47				गीता : २/१६ अध्यारोप-अपवाद से ब्र०ज्ञान,जगत निद्रा का कार्य, ब्र० का अभेद दर्शन ही ज्ञान	
12	Voice – 01	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
13	Voice – 02	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
14	Voice – 03	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
15	Voice – 04	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
16	Voice – 05	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
17	Voice – 06	47				भक्ति १ ईश्वर की वाणी त्रिकाण्डमय वेद नवधा भक्ति, रामायण एवं भागवत का उल्लेख	
18	Voice – 07	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
19	Voice – 08	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
20	Voice – 09	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
21	Voice – 010	51				भक्ति २ ईश्वर की वाणी वेद, गीता-रामायण उपदेश मोक्ष साधन नवधाभक्ति,	
22	Voice – 011	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
23	Voice – 012	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
24	Voice – 013	38				स०रहस्योपनिषद-सरस्वती की स्तुति महिमा एवं ५ अंश - अस्ति भाति प्रिय नाम रूप ओंकार	Imp
25	Voice – 014	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
26	Voice – 015	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
27	Voice – 016	43				माया ३ निद्रा ही अज्ञान रूपी माया है, स्वप्न-जागृत उसके कार्य हैं बह्म सत्यं जगत मिथ्या	3
28	Voice – 017	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
29	Voice – 018	14				माया ४ क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ, देह-देही, सीताराम, गौरी-शंकर दो ही हैं राम सत्य व सीता माया शक्ति हैं	4
30	Voice – 019	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
31	Voice – 020	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
32	Voice – 021	52				माया ५ गीता अ०१५ - पुरुष, क्षर अक्षर प्रकृति ब्रह्म में माया का प्रादुर्भाव सर्प-रज्जूवत्	5
33	Voice – 022	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
34	Voice – 023	48				अर्जुन की नित्य सुख व अमरता की कामना भगवान के स्वरूप का ज्ञान ही इसका निदान है	
35	Voice – 024	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA
36	Voice – 025	42				माया ६आत्मा असंग दर्पण मात्र जगत निद्रा रूपी माया का परिणाम व चेतन का विवर्त है	6
37	Voice – 026	49				माया ७वेद के ४ अंग-- विद्ज्ञाने, विद्सत्तानाम, विद्विचारणा, विद्लाभे-अहंब्रह्मास्मि	7
38	Voice - 027	00				प्रवचनअनुपलब्ध	NA